Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VIII ISSUE- VII JULY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

अनुवाद का तात्विक एवं शास्त्रीय विवेचन

- डॉ. लियाकत मियाभाई शेख
लोकसेवा कला व विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद महाराष्ट्र
E-mail – shaikhliyakat03@gmail.com

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, तो अनुवाद उस भाषाभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में ले जाने का सशक्त माध्यम है, जो मानव समाज को आपस में जोडने का अनूठा कार्य करता है। अनुवाद के बिना मानवी सभ्यता का विकास संभव ही नही हो पाता, वास्तव में यह मनुष्य-मनुष्य के बीच की संवाद यात्रा है, ज्ञान यात्रा है और उसकी विकास यात्रा है। मानव सभ्यता के विकास में अनुवाद का महत्व अक्षुण्ण है । मानवी इतिहास में ज्ञान के आदान-प्रदान में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । अनुवाद किसी भाषा पाठ का किसी दूसरी भाषा में मूल पाठ की संवेदना एवं विचारों को पुनःर्सृजित करना है । यह एक किसी भाषा रचना को दूसरी भाषा में पुनःरचने का कौशल है । भाषा या भाषिक संवाद वस्तुतः भाषाओ के आपसी मेलजोल पर निर्भर करता है, किंतु यह भाषिक मेलजोल दो भिन्न भाषाओं की भिन्न भिन्न प्रकृति और संरचना के कारण सहज एवं आसान नही होता इसी कारण अनुवाद को पुनःर्सृजन कहा जाता है । जो की सृजन के समान ही महत्वपूर्ण होत है। अतः अनुवाद सहज एवं सरल नही किंतु कठिन भाषा कर्म है।

अनुवाद की प्रक्रीया इस कठीन कार्य को संभव बनाती है। अनुवाद की प्रक्रीया दो भाषाओ में आपसी संवाद के जरीए संपन्न होती है । जो इस प्रकार है - पाठ - पठन, पाठ- विश्लेषण, भाषांतरण, पुर्नगठन । और पुनःपरीक्षण अनुवाद में दो भाषाओ के बीच होने वाला यह अंतरण सहज, सरल नही होता क्योंकि किसी भी दो भाषाओ मे पर्याप्त अंतर होता है। प्रत्येक भाषा समाज उस समाज की मान्यता, उसकी संस्कृति, भौगोलीक परिवेश, साथ ही एक भाषा समाज की जीवन दृष्टी, आदि सभी दूसरे भाषा - समाज से भिन्न होते है। इसी कारण भाषा और लक्ष्यभाष के बीच सामंजस्य स्थापन करना होता है। यह सामंजस्य जीतना सहज सरल सटीक और अर्थपुर्ण होगा वह अनुवाद उतना सफल ही होता है । वास्तव में अनुवाद दो भाषाओ के साथ दो भाषा समाजों और संस्कृतियों के बीच का ज्ञान सेतु है । दो बाधाएँ कभी भी एक समान नही होती मुहावरो, उनके शब्द, ध्वनी, अर्थ, उच्चारण, लय, पदबंध, वाक्य विन्यास, लोकोक्तीयाँ, अलंकार छंद आदी की संरचना भिन्न होती है। उनमें पर्याप्त अंतर होता है। और यही अंतर अनुवाद में बाधाएँ उत्पन्न करते है। मूल पाठ की संवेदना का लक्ष्यभाषा में अंतरण संभव नही होता अपितु यह एक श्रमसाध्य कर्म है किंतु एक कुशल अनुवादक अपने ज्ञान, अनुभव अध्ययन व्दारा उसे सार्थक रुप प्रदान करता है। वास्तव में अनुदित कोई भी रचना लक्ष्यभाषा में पुर्नजीवन होता है उसी कारण अनुवाद को रचना की पुनर्रचना और सृजन कहा जाता है इसमें अभिव्यक्ति का माध्यम अर्थात भाषा बदल जाती है। पाठ या कथन की वस्तु वही रहती है। अनुवद भी इतिहास, अलोचना, सृजन की तरह ही एक पुनर्लेखन होता है। अनुदित पाठ एक प्रकार से संसाधिन पाठ होता है। आधुनिक समय में अनुवाद जितना कला है। उतना ही विज्ञान भी है। अनुवाद की प्रक्रिया और तकनिक उसे अपने गतंव्यतक पहुंचाती है।

अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है - कथन का पुनः कथन या किसी कही गई बात को फिर से कहना । इस शब्द के अनेक पर्याय प्रचलित है । जैसे अनुवचन अनुवाक, अनुकथन, टीका, पश्चात कथन, भाषानुवाद, आवृत्ती आदि, हिंदी में अनुवाद का अर्थ अंग्रेजी के ट्रान्सलेशन का लिया जाता है । ट्रान्सलेशन का सीधा एवं सरल अर्थ है पाठ, मूल कथ्य या विषय को उस पार ले जाना । अर्थात एक भाषा में व्यक्त किसी कथन या विचार को दूसरी भाषा में ले जाना या प्रस्तुत करना ही अनुवाद है, प्राचीन संस्कृत मे भी अनुवाद शब्द किसी एक भाषा में कही गई बात को बोलचाल की भाषा में फिर से कहने के अर्थ में प्रयुक्त होता था । चिंतामणि के अनुसार 'प्राप्तस्य पुनः कथने या ज्ञानार्थस्य प्रतिपादने इति अनुवादः से तात्पर्य भी स्पष्ट है कि पहले से ज्ञात ज्ञान को कहना अनुवाद है ।' ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार "Translation : the act or an instance of Translating a written or spoken rendering of the

meaning of a word, speech, book etc. In another Language"[१]

इस का सरल अर्थ है- अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में रुपांतरण है किसी एक भाषा के शब्द, कथन, पुस्तक आदि का दूसरी भाषा में लिखित या मौखिक प्रस्तुतिकरण है। अनुवाद में पाठ को पुनः प्रस्तुत करना यानी दुहराना है तो यह सामान्य दुहराना नही है। इसमे स्त्रोत भाषा के किसी कथन अथवा उसके अर्थ को लक्ष्य भाषा में अंतरित करना हमेशा आसान नहीं होता । अंतरण की यह प्रक्रिया किंचित जटिल होती है, इसके कुछ विशिष्ट भाषागत कारण होते है जैसे - शब्द, अर्थ-प्रसंग, वाक्य-संरचना अभिव्यक्ति आदि दृष्टी से कोई भी दो भाषा एक समान नही होती प्रत्येक भाषा समाज और उसकी मान्यता उसकी संस्कृती, भौगोलिक परिवेश विशिष्ट एवं भिन्न भिन्न होता है। किसी भाषा -समाज की जीवन दृष्टि और अभिव्यक्ति का ढंग भी दूसरे किसी भाषा-समाज से पृथक एवं विशिष्ट होता है। इन्ही सब कारणों से एक भाषा के कथन का अथवा कथन के अर्थ का किसी दूसरी भाषा में अंतरण करना मुश्किल होता है। अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है। स्त्रोतभाष की किसी अभिव्यक्ति को लक्ष्यभाषा में समतुल्य और समानार्थक रुप में अभिव्यक्त करना एक कठिन कार्य है। इस हेतु अनुवादकर्ता को दोनो भाषाओं के बीच सामंजस्य बैठाना पडता है। किंतु कोई भी दो भाषाएं एक जैसी नही होती, उनके ध्वनी,शब्द, अर्थ, उच्चारण, लय, पदबंध, वाक्यविन्यास, मुहावरे-लोकोक्ति, अलंकार, छंद आदि संरचनात्मक अवयव के स्तर पर भाषाऐं एक दूसरे से काफी भिन्न होती है, भाषा को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य के चलते कोई एक भाषा किसी अन्य भाषा से सर्वथा भिन्न होती है, इसलिए किसी एक भाषा के पाठ का दूसरी भाषा में अनुवाद करना उतना आसान नही होता जितना कि वह प्रतीत होता है, इसलिए अनुवाद को रचना की पुनर्रचना अथवा सृजन का पुनर्सृजन कहा जाता है ।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है, तो अनुवाद अभिव्यक्ति को सुगम बनाने का साधन अर्थात एक भाषा की अभिव्यक्ति को उसे भाषा से अनजान लोगों के बीच ले जाने का जरिया । अनुवाद का संबंध मानव समाज की सभ्यता के उदभव और विकास से रहा है मानव समाज का विकास संभव ही नही हो पाता यदि उनमें संवाद या संप्रेषण नही होता, अतः कहा जा सकता है कि अनुवाद का इतिहास मनुष्य सभ्यता इतना ही प्राचीन है । अनुवाद अनुपयुक्त भाषा व्यवहार है इसमे भाषा का भाषा में अनुपयोग होता है, इसका एकमात्र उद्देश एक भाषा में व्यक्त विचार अथवा ज्ञान राशी को दूसरी भाषा में व्यक्त करना होता है । इसी कारण कुछ विदवान अनुवाद को 'अनुप्रयुक्त' भाषिक प्रक्रिया ' कहते है, अनुवाद में यह अनुप्रयोग कई स्तरें पर होता है, पहले स्तर पर भाषा विज्ञान के सिध्दांतों का अनुप्रयोग होता है एवं दुसरे स्तर पर भाषा विज्ञान के सिध्दांतो का अनुप्रयोग होता है इसीलिए अनुवाद का स्वभाव अनुप्रयोगात्मक होता है । अनुवाद स्वभाव से ज्ञानाभिमुख होता है ज्ञान कहीं भी और किसी भी भाषा मे हो वह उसके लिए आकार्षण का कारण बनता है किंतु अनुवाद में भाषा व्यवहार की कई मुश्किले आती है, इनसे अनुवादक को कई स्तरोंपर जूझना पडता है । कुशल अनुवादक यह काम अपने भाषिक ज्ञान तथा अनुभव के बलपर करता है ।

अनुवाद पाठ का होता है अनुवाद में पाठ का अर्थ मूल रुप मे ही रहता है, केवल उसकी भाषा बदलती है, अनुवाद मे पाठ को स्त्रोत भाषा से किसी अन्य भाषा में अंतरित किया जाता है, अनुवाद में इस अन्य भाषा को लक्ष्यभाषा कहा जाता है, मुख्यतः अनुवाद के तीन प्रमुख तत्व होते है १ - मूल पाठ, २- स्त्रोत भाषा, ३- लक्ष्य भाषा

मूल पाठ :

अनुवाद में पाठ सर्वोपरी होता है इसके अभाव में अनुवाद की कल्पना नही की जा सकती । भाषांतरण के लिए मूल पाठ का होना पहली और अनिवार्य शर्त है, अनुवाद में पाठ से तात्पर्य उस वाक्य, वाक्यखंड, कथन, प्रोक्ति अथवा कोई रचना या किसी कृति से है जिसका भाषांतरण किया जाता है । नाइडा इस संदर्भ मे लिखते है - 'अनुवाद का संबंध स्त्रोतभाषा के संदेश का पहले और शैली के धरातल पर लक्ष्यभाषा में निकटतम स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करने से होता है ।'[२] पाठ सामान्यतः एक कथन होता है । भाष में व्यक्त कोई शब्द, वाक्य, अनुच्छेद या अपने आप में एक मुकम्मिल विचार महावाक्य, आदि अनुवाद में पाठ कहलाता है । अनुवाद मे इसी कथन को किसी अन्य भाषा में अंतरित किया जाता है । इस प्रकार से अनुवाद स्त्रोतभाषा के कथन का लक्ष्यभाषा में पुर्नकथन होता है । इसलिए अनुवाद मे स्त्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा दोनो समान रुप से महत्वपुर्ण होती है । प्रसिध्द विद्वान डॉ भोलानाथ तिवारी अनुवाद की प्रक्रिया के संदर्भ मे लिखते है "अनुवाद करते समय अनुवाद कर्ता को 'पाठ-पठन' पाठ विश्लेषण, भाषान्तरण, समायोजन और मूल से तुलना जैसी प्रक्रियाओं से गुजरना पडता है ।'[३]

सारांश रुप में कहा जा सकता है की, अनुवाद पाठ का होता है और इसमें पाठ के अर्थ एवं अभिप्राय का किसी अन्य भाषा मे अंतरण होता है अर्थात अनुवाद में पाठ का अर्थ यथावत रहता है किंतु पाठ की भाषा बदल जाती है ।

स्त्रोतभाषा -

पाठ या कथन की भाषा को स्त्रोतभाषा कहा जाता है दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है की स्त्रोतभाषा यानी वह भाषा, जिसमे कोई कथन या पाठ रचा होता है स्त्रोतभाषा पाठ की मूलभाषा होती है । पाठ का अर्थ और प्रभाव स्त्रोतभाषा और उसकी संरचना से पुरी तरह बंधा हुआ होता है इसलिये अनुवाद में पाठ का स्त्रोतभाषा आधारित स्वरुप अधिक मायने रखता है । अनुवाद कर्ता को सजग रहना चाहिए की अनूदित पाठ मूल पाठ जैसा बने । वैसे तो अनुवाद स्त्रोतभाषा के पाठ का लक्ष्यभाषा में शब्दशः अंतरण नही होता अनुवाद अगर समानांतर पाठ - सृजन है, सृजन का पुनर्सृजन तो यह स्त्रोतभाषा का ही सृजन होता है। पाठ अपने प्रकृत रुपमें किसी मानवीय अनुभूती की अभिव्यक्ति होता है और मानवीय अभिव्यक्ती का माध्यम होती है - भाषा । इसलिये पाठ के अस्तित्व के लिये भाषा अनिवार्य होती है । अनुवाद पाठ का होता है और पाठ की एक भाषा होती है, जीसे स्त्रोतभाषा कहा जाता है और यह अनुवाद का प्रमुख तत्व है ।

लक्ष्यभाषा :

अनुवाद में पाठ जिस भाषा में अंतरित किया जाता है, उसे लक्ष्यभाषा कहते है । किसी कथन, पाठ, प्रोक्ति या कृति का अनुवाद करना होता है, वह वस्तुतः अपनी मूल भाषा में होती है, उसी मूल भाषा से कृती का किसी अन्य भाषा में अनुवाद होता है, उस भाषा को लक्ष्यभाषा कहा जाता है । वास्तव में अनुवाद स्त्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में अंतरण का कर्म होता है । अनुवाद स्त्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में पाठांतरण मात्र नही होता । अनुवाद लक्ष्यभाषा के स्वभाव और शैली के अनुरुप पाठांतरण होता है । अतः अनुवाद में लक्ष्यभाषा के शब्द, वाक्य विन्यास, शैली आदी तत्व प्रधान होते है । अनूदीत पाठ लक्ष्यभाषा के प्रकृती के अनुरुप सहज और प्रवाहपूर्ण हो । अनुवाद की सफलता लक्ष्यभाषा में अनुदित पाठ होने में नही बल्की लक्ष्यभाषा की रचना होने में है । अनुवाद करते समय अनुवादक को लक्ष्यभाषा में इसे अपने भाषा-ज्ञान, अभ्यास और सजृनात्मक कौशल से साधना पडता है । इसलिए अनुवाद की शक्ति लक्ष्यभाषा की अभिव्यक्ति और उस अभिव्यक्ति की गुणवत्ता में निहित होती है । इसी कारण लक्ष्यभाषा अनुवाद का महत्वपुर्ण घटक है ।

अनुवाद का शास्त्रीय विवेचन :

अनुवाद सजृनात्मक भाषाकर्म है । जो दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाला एक सृजन व्यापार है । अनुवाद यह एक सहज-सृजन व्यापार नही बल की अनुवाद कला एवमं विज्ञान की भांति ही एक श्रमसाध्य विशिष्ट कार्य है । मुल भाषा में कथन का जो आशय होता है, उसे उसके सौंदर्य को आघात पहुँचाये बिना लक्ष्यभाषा में प्रकट करना ही अनुवाद है । अनुवाद वास्तव में एक शास्त्रीय विवेचन का विषय है, इसपर विभिन्न अनुवाद शास्त्रियों के विचारों को देख सकते है । अनुवाद के संदर्भ में वैदिक संस्कृत, उपनिषद, निरुक्त आदी प्राचिन ग्रंथो में अनुवाद के विषय में जो व्याख्याएँ एवंम कथन प्राप्त होते है वह देखने योग्य है । ऋग्वेद में 'अन्वेको वदंती यददाती' जिसका सरल अर्थ है - बोले हुए का अनुकरण करना है । आचार्य सायण भी अनुवाद का प्रयोग दोहराने के अर्थ में करते है - 'अधिः पंचम्यार्थानुवाद ।' इसी प्रकार से ऐतरेय ब्राम्हण ग्रंथों में अनुवाद का प्रयोग 'आवृती' पुनः कथन या 'दुबारा' कहना के अर्थ में प्राप्त होता है। उपनिषदों में 'अनुवंदती' का प्रयोग दुहराने के अर्थ में हुआ है। यास्क वेदो के आदि भाष्याकार रहे है । उन्होने जो वेदों की व्याख्या की है । वह निरुक्ति के नाम से प्रसिध्द है उसमें अनुवाद के लिए 'कालानुवादं परित्य' दुहराने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । पाणिनि के अष्टाध्यायी में 'अनुवादे चरणानाम' इस सुत्र की व्याख्या करते हुए लिखते है । अवगतार्थस्य प्रतिपादने इत्यर्थः । इसका सरल अर्थ है' अवगत का प्रतिपादन या ज्ञात को कहना । मीमांसा मे 'अनुवाद' कहते हुए उसके तीन भेद बतलाऐ है - भूतार्थानुवाद, स्तुत्यर्थानुवाद और गुणानुवाद । इसी प्रकार से न्यायसूत्र में अनुवाद को विधि एवं विहित का पुनर्कथन कहा गया है । शब्दार्थ चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ 'प्राप्तस्य पुनः कथने' या 'ज्ञातार्थस्य' प्रतिपादने' दिया गया है । प्रतिपादित करना । दुहराना इसे ही 'अनुवाद' या अनुवचन कहा जाता है। जैमिनीय न्यायमाला में अनुवाद इस प्रकार से परिभाषित किया है -'ज्ञातस्य कथनमनुवाद' ज्ञात का कथन ही अनुवाद है । संस्कृत व्याकरण में भर्तृहरि ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए लिखा है 'आवृत्तिरनुवादो वा' अर्थात किसी कथन की आवृत्ती करना अनुवाद है । सारांश रुप में कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में विशेषरुप से संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश में अनुवाद की कोई स्पष्ट परंपरा नही मिलती । संस्कृत साहित्य में अनुवाद शब्द का प्रयोग मुख्यरुप से गुरु के वचन को दुहराकर कंठस्थ करने के संदर्भ में हुआ है। अनुवाद की एक क्षीण धारा बिखरे स्वरुप

में दिखाई पडती है किंतु इतना तो सच है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में यह शब्द सिधे संस्कृत से लिया गया है । इस संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी लिखते है – ‘यदी किसी समय संस्कृत में इस अर्थ में इसका प्रयोग न होता तो आधुनिक काल की इतनी अधिक भाषाओं की न केवल आर्य परिवार की बल्कि द्रविड ‘कन्नड और तेलगु’ में भी प्रयोग नही मिलता है।’ इस प्रसंग में कहना न होगा की, कन्नड और तेलगु ने संस्कृत से बहुत कुछ लिया है ।[४] हिंदी में अनुवाद के लिए छाया, टिका, भाषानुवाद, तरजुमा आदि शब्द प्रचलित रहें है । अनुवाद शब्द उन्नीसवीं सदि के उत्तरार्ध में सर्वाधिक रुप में प्रचलित हुआ है । हिंदी में अनुवाद को विमर्श का विषय बनाने का श्रेय डॉ. भोलानाथ तिवारी को जाता है । उनके अनुवाद चिंतन पर अंग्रेजी प्रभाव स्पष्ट रुपसे दिखाई देता है । अनुवाद विमर्श को गहन, आधुनिक और यथासाध्य, मौलिक स्वरुप देने में डॉ. रविंद्रनाथ श्रीवास्तव का योगदान विशेष उल्लेखनिय है । डॉ. भोलानाथ तिवारी अनुवाद के संदर्भ में लिखते है – ‘एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति व्दारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है’।[५] श्रीवास्तव के अनुसार ‘अनुवाद स्त्रोतभाषा के पाठ का पहले विकोडीकरण है और इसके बाद कोडीकरण के माध्यम से अर्थ का लक्ष्यभाषा के पाठ में पुर्नगठन’[६] हिंदी अनुवाद-चिंतन में लक्ष्यभाषा को प्रमुखता देने का विचार महत्वपूर्ण है ।

‘अनुवाद’ साहित्य में आधुनिक अवधारणा है। भारतीय चिंतन में इस पर विचार अवश्य हुआ है । किंतु इस पर पश्चिम के प्रभाव को नकारा नही जा सकता । एक शास्त्र के रुप में यह पश्चिम की देन है। सेंट जेरॅम अपने समय के प्रख्यात भाषाविद् और बाईबिल के जानकार थे । जेरॅम ने बाईबिल के अनुवाद करते हुए अनुवाद के संबंध में जो विचार व्यक्त किए व अत्यंत महत्वपूर्ण है । उसमें अनुवाद की पक्रिया, व्याघात तथा भाषांतरण की समस्याओं पर विचार किया गया है । जेरॅम के अनुवाद का सब और विरोध हुआ किंतु वे आगे चल कर एक महान अनुवादक के रुप में प्रसिध्द हुए । इसीकारण उन्हे अनुवाद का मसिहा भी कहा जाता है । डॉ. सेमुअल जॉन्सन अर्थ के अंतरण को अनुवाद का लक्ष्य घोषित करते हुवे लिखते है – ‘अनुवाद मूल के अर्थ को बनाए रखते हुए उसे अन्य भाषा में अंतरण करना है ।[७] डॉ.जॉनसन का यह विचार आगे चल कर ‘अर्थ संप्रेषण सिध्दांत’ के रुप में विख्यात हुआ । वास्तव में अनुवाद एक भाषा के शाब्दिक प्रतिको की अन्य भाषा के शाब्दिक प्रतिको व्दारा व्याख्या है ।[८] अनुवाद के क्षेत्र में टैंकॉक नाम ‘प्रभाव समता का सिध्दांत’ के लिए प्रसिध्द है । उनकी दृष्टी में अनुवाद – ‘किसी एक भाषा पाठ की शैली और प्रभाव समग्र हा दूसरी भाषा में पुर्नस्थापना है ।’[९] पाश्चात्य अनुवाद विद प्रो.जे.सी. कैटफोर्ड अनुवाद का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए अनुवाद में अभिव्यक्ति की समरुपता से अधिक समतुल्यता को महत्व देते है । उनकी दृष्टी मे अनुवाद में मूल की समानता नही समतुल्यता होती है’ अनुवाद एक भाषा की पाठ्य सामग्री का दूसरी भाषा की पाठ्य सामग्री रुप में समतुल्यता के आधार पर प्रतिस्थापन है ।[१०] कैटफोर्ड के चिंतन के व्यापक धरातल पर ले जाने का श्रेय युजीन ए. नाईडा को जाता है । नाईडा अनुवाद में मूल पाठ के अर्थ और शैली, दोनो की रक्षा की बात करते है। इसके लिए अनुवादकर्ता को भाषांतरण करते समय सर्जक और अनुवादक दोनों की भूमिका निबाहनी पडती है। मार्टिन लूथर अपने समय के मशहूर भाषाशास्त्री और अनुवादक थे, अन्होंने अनुवाद पर विस्तृत चिंतन प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार पाश्चात्य विद्वानों में एर्ल रस्कोमेन, ऐलेक्जेंडर पोप, एलेक्जेंडर फ्रेजर टिटलर, मैथ्यू आरनॉल्ड, फिट्ज जेरॅल्ड,विलियम फावले, एटिने दोलेन, मेलिनोस्की, मेदनिकोवा आदि विशेष उल्लेखनीय नाम है। इन पाश्चात्य विद्वानो ने अनुवाद को लेकर अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। इनमें से किसीने भाषानुवाद को, तो किसी ने भाव, शैली तथा स्वाभाविकता को प्रमुखता दी है, तो किसी ने समतुल्य प्रभाव को महत्व दिया है। इस संदर्भ में फिट्ज जेरॅल्ड के विचार विशेष उल्लेखनिय है – ‘मेरा विश्वास है कि अनुवाद को अपनी रुचि के अनुसार मूल के अंतरण का संस्कार कहना चाहिए ।’

अंततः संक्षेप मे कहा जा सकता है कि पश्चिम में विकसित अत्याधुनिक अनुवाद विमर्श एक तरह से विज्ञान संपोषित भाषा विमर्श है। इसका लक्ष्य है भाषा के दार्शनिक अर्थपरक एवं प्रकृतिपटक पक्षों की गहन विवेचना के माध्यम से सटीक भाषांतरण की खोज करना । आधुनिक काल में अनुवाद का स्वरुप और स्वभाव पूरी तरह से बदल गया है। अब यह एक आधुनिक ज्ञानानुशासन, सुसंगत रुप से संपादित विज्ञान के तौर पर अनुवाद अब दुनियाभर में अध्ययन तथा अनुसंधान के विषय के रुप में स्वीकृत है। कॉम्प्यूटर, इंटरनेट, आदि अत्याधुनिक संसाधन तथा तकनिक से जोडकर अनुवाद का उच्च्व अध्ययन भी अब होने लगा है। यह अनुवाद के क्षेत्र मे हुई उल्लेखनिय तकनीकी प्रगति का ध्योतक है ।

संदर्भ सुची -

1. Illustrated oxford Dictionary, oxford university press, New Delhi, edition 1998, page-884 A
2. Eugene A Nida and Charles R Taber. The theory and practice of translation leiden, 1964, Page-12 A

३. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी पृ.१०३,१०४, शब्दकार नई दिल्ली सांतवा सस्करंण १९९८ ।

४. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी पृ.१२-१३, शब्दकार, नई दिल्ली सांतवा सस्करंण १९९८ ।

५. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी पृ.१५-१६, शब्दकार, नई दिल्ली सांतवा सस्करंण १९९८ ।

६. अनुवाद भाषा समाज और संस्कृती का विभाषीकरण, अनुवाद का सामायिक परिप्रेक्ष्य- डॉ.रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, पृ.८१, संपादक प्रो दिलीपसिंह, प्रो. ऋषभदेव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, प्र. सं.२००६ ।

७. अनुवाद के सिध्दांत : परंपरागत एवं अधुनिक दृष्टीकोन -विनोद कुमार संदलेश के लेख, पृ.४५ से उध्दत. अनुशीलन.संयुक्तांक अगस्त १९९९ नई दिल्ली ।

८. इन ऑन ट्रान्सलेशन ऑन लिग्वीस्टीक आस्पेक्ट्स ऑफ टांसलेशन रोमन जैकसन संपादित पृ.२३३, रुपेन ए.ब्रोवर, न्युयॉर्क १९६६। ।

९. आस्पेक्टस ऑफ ट्रान्सलेशन, ए.एच.स्मिथ, पृ.२६ लौंगमैन, लंदन, १९५८ ।

१०.अ लिग्विस्टिक थ्योरी ऑफ ट्रान्सलेशन, जे.सी. कैटफोर्ड, पृ.२० ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, लंदन १९६५ ।